साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

आज फिर गया गाँव

-शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

आज फिर गया गाँव

वो तालाब

जो स्वच्छ पानी से

भरा रहता था लबालब

अब भर दिए गए थे

कूड़ा-कचरों से

सुना है उसी जगह

बनाने वाली है मधुशाला

आज फिर गया गाँव

सब कुछ मिला

पर न मिली

वो सादगी

वो सादापन

गाँव में घुस आई है

नई सभ्यता

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

सभ्यता का प्रभाव

और वस्त्र का आभाव

साफ़ झलक रहा था

आज फिर गया गाँव

सब कुछ मिला

पर न मिली

वो बुढ़िया

जो करती थी देख भाल

बाग के फल फुल

अब कहा थे

वो आम की झुकी डाल

वो अमरूद का पेड़

वो विशाल वेर

अब तो बस नजर आते है

बांस और सिसम

काँटों से घिरा था

सुखा बरगद

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

आज फिर गया था गाँव

सब कुछ मिला

पर न मिली

वो गली

जहाँ खेली थी

शीशे की गोली

गिल्ली डंडा

वो नहीं मिली सड़को की धुल

बन गये थे पक्के सड़क

ईट पत्थरों से

आज फिर गया था गाँव

सब कुछ मिला

पर न मिली

पीपल की ठंडी छाव

वो आत्मीय भाव

जो मिलता रहता था

अपने क्या

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

अजनबी से भी

चप्पल नहीं जुत्हें थे पाव में

फिर भी कुछ चुभ रहा था

दिल में ...

आज फिर गया था गाँव

सब कुछ मिला

पर न मिली

वो निम् का पेड़

जो पल में लेती थी पीड़ा हर

जिसकी सुद्ध हवा

थी मुफ्त की दवा

लोगों के बदल गये

हाव- भाव

आज फिर गया था गाँव

-शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'